इफिसियों 6:12 (ESV)

“क्योंकि हमारा मल्लयुद्ध रक्त और मांस से नहीं है, परन्तु प्रधानों से, अधिकारियों से, इस अन्धकारमय संसार के शासकों से, और स्वर्गीय स्थानों में दुष्ट आत्मिक शक्तियों से है।”

बाइबल सिखाती है कि मसीही लोग जिस आत्मिक युद्ध का सामना करते हैं, वह मनुष्यों के विरुद्ध नहीं, बल्कि दुष्टात्माओं की संगठित सेनाओं के विरुद्ध है।
शब्द “सेनाएँ” यह दर्शाता है कि ये आत्मिक शक्तियाँ बहुत बड़ी संख्या में और अनुशासित ढंग से संगठित हैं; और “दुष्ट” शब्द उनके उद्देश्य को दिखाता है — परमेश्वर की योजना का विरोध करना और हानि पहुँचाना।

दुष्टात्माएँ कैसे कार्य करती हैं, यह समझने से पहले यह जानना आवश्यक है कि पवित्र स्वर्गदूतों का उद्देश्य क्या है। स्वर्गदूत आत्मिक प्राणी हैं जिन्हें परमेश्वर ने अपनी सेवा और अपने लोगों की सहायता के लिए बनाया है।

2 पतरस 2:4 (KJV)

“क्योंकि जब परमेश्वर ने उन स्वर्गदूतों को नहीं छोड़ा जिन्होंने पाप किया, परन्तु उन्हें नरक में डाल दिया और अन्धकार की जंजीरों में बाँध दिया कि न्याय के दिन तक रखे जाएँ…”

भजन संहिता 91:11 (NIV)

“क्योंकि वह तेरे विषय में अपने दूतों को आज्ञा देगा कि वे
तेरी सारी राहों में तेरी रक्षा करें।”

जो स्वर्गदूत परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह में शामिल हुए, वे ही दुष्टात्माएँ बन गए (देखें यशायाह 14:12–15; यहेजकेल 28:12–19)।
उनमें से कुछ को पृथ्वी पर डाल दिया गया, जबकि कुछ को अन्धकार में बाँध दिया गया। जो पृथ्वी पर हैं, वे पवित्र स्वर्गदूतों के कार्यों को देखते हैं और उन्हें रोकने का प्रयास करते हैं

दुष्टात्माएँ शायद ही कभी अकेले काम करती हैं — वे सेना की तरह एकजुट होकर कार्य करती हैं और पवित्र स्वर्गदूतों की

रणनीतियों की नकल करती हैं।

लूका 8:30–31 (NIV)

“यीशु ने उससे पूछा, ‘तेरा नाम क्या है?’ उसने उत्तर दिया, ‘लीजोन,’ क्योंकि हम बहुत हैं।”

2 राजा 6:15–17 (ESV)

“एलिशा के सेवक ने देखा कि पहाड़ घोड़ों और आग के रथों से भरा है — पवित्र स्वर्गदूत उनकी रक्षा कर रहे हैं।”
उसी प्रकार दुष्टात्माएँ भी संगठित समूहों में एकत्र होकर परमेश्वर के कार्य का विरोध करती हैं।

आध्यात्मिक सत्य:
स्वर्गदूत और दुष्टात्माएँ दोनों आत्मिक पदक्रम में कार्य करती हैं।
पवित्र स्वर्गदूत परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करके विश्वासियों की रक्षा करते हैं और उनकी सेवा करते हैं।

इसके विपरीत, दुष्टात्माएँ हर संभव अवसर पर परमेश्वर की योजना को रोकने और विश्वासियों को नष्ट करने की कोशिश करती हैं।

दुष्टात्माएँ मुख्य रूप से परमेश्वर के लोगों — पवित्र जनों पर आक्रमण करती हैं।
वे पापियों में रुचि नहीं रखतीं जो पहले ही न्याय के अधीन हैं, बल्कि वे उन लोगों को निशाना बनाती हैं जो उद्धार पा चुके हैं और आत्मिक रूप से बढ़ रहे हैं।

1 पतरस 5:8 (ESV)

“सावधान और सचेत रहो; तुम्हारा शत्रु शैतान गर्जन करने वाले सिंह के समान घूमता रहता है, इसलिये कि किसी को निगल जाए।”

यूहन्ना 10:10 (NIV)

“चोर केवल चोरी करने, घात करने और नाश करने आता है; परन्तु मैं इसलिये आया हूँ कि वे जीवन पाएं और बहुतायत से पाएं।”

□□ □□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□, □□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□, □□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ — □□□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□

1□ □□□□□□□□□

□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□

□□□□□ 26:41 (ESV)

> “□□□□□ □□□ □□ □□□□□□□□□ □□□, □□□□ □□□ □□□□□□□ □□□ □ □□□□;
> □□□□□ □□ □□□□□□ □□, □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□”

□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□

2□ □□□ □□ □□□ □□□□

□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□□□□□□□

□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□

□□□□□□ 59:1–2 (NIV)

> “□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□…
> □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□ □□
> □□□ □□ □□□□ □□□”

3□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□

□□□□□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□
□□□□□ □□□□ □□□

□□□□□□□□□□□ 3:16 (ESV)

> “□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□, □□ □□□ □□□□□□
> □□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□”
> □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□ *(□□□□□
> □□□□□ 4:1–11)*□

4□ □□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□

□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□

□□□□□□□□□□□□ 10:25 (NIV)

> “□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□ □ □□□□□□, □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□, □□□□□□□ □□-□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□”

□□□□□□□□□ 4:11–12 (ESV)

> “□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□ □□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□, □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□; □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□□”

□□□□□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□ (□□□□□□□□□□□□□□□□ 12:12)□

□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□

यदि हम सतर्क, अनुशासित और आत्मिक रूप से दृढ़ न रहें, तो हम पीछे हट सकते हैं या विश्वास छोड़ सकते हैं।

लेकिन जब हम प्रार्थना, पवित्रता, वचन और संगति में बने रहते हैं, तब हम परमेश्वर के पवित्र स्वर्गदूतों को आमंत्रित करते हैं कि वे हमारे साथ चलें, हमारी रक्षा करें और हमारी सेवा करें — ताकि हम आत्मिक अन्धकार की शक्तियों पर विजयी हों।

सावधान रहो। दृढ़ खड़े रहो। वचन में बढ़ो। परमेश्वर के पवित्र स्वर्गदूतों की रक्षा और मार्गदर्शन में चलो।

आशीर्वाद सहित।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP[1]….

Share on:
WhatsApp
Endnotes:
1. WHATSAPP GROUP:
https://chat.whatsapp.com/L3ysoFZcz058XCX9oLvKL1?s=cl&p=a&mlu=4&ilr=4